राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य का अनुवाद आवश्यक क्यों?

संगीता मित्तल

प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)

सार

यह लेख हिंदी यात्रा साहित्य के जनक माने जाने वाले राहुल सांकृत्यायन के यात्रा लेखों का अनुवाद करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिस से उन्हें वैश्विक यात्रा लेखन विमर्श में वह महत्वपूर्ण स्थान मिल सके जिसके वह हकदार हैं । उनके जीवंत यात्रा वृत्तांत *किन्नर देश में* पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह लेख उनके बहु-विषयक दृष्टिकोण- जिस में इतिहास, नृवंशविज्ञान, राजनीति और संस्कृति का सम्मिश्रण है- की जांच करता है। सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य स्थानीय ज्ञान प्रणालियों, स्वदेशी संस्कृतियों और स्वयं और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में घूमने के दर्शन को महत्व देकर औपनिवेशिक और यूरोसेंट्रिक आख्यानों को चुनौती देता है। अनुवादों की कमी के कारण उनका व्यापक कार्य, भाषाई निपुणता और सामाजिक-राजनीतिक प्रतिबद्धता अकादमिक यात्रा लेखन अध्ययनों में कम प्रतिनिधित्व पाती है। लेख का तर्क है कि सांकृत्यायन का अनुवाद केवल एक भाषाई अभ्यास नहीं है, बल्कि एक आवश्यक ज्ञानमीमांसीय हस्तक्षेप है जो आधुनिक यात्रा लेखन और गैर-औपनिवेशिक विद्वता के मापदंडों को परिभाषित करता है।

मुख्य शब्द: राहुल सांकृत्यायन, यात्रा लेखन अध्ययन, अनुवाद अध्ययन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिमालयी नृवंशविज्ञान

सांकृत्यायन समकालीन और पश्चिमी यात्रा लेखन अध्ययन और सिद्धांत के तहत एक समग्र यात्रा लेखक हैं क्योंकि उन्होंने शारीरिक रूप से रोमांच, साहस, ज्ञान और सुधार से भरी कई महान यात्राएँ कीं, जो ओडीसियस जैसी भावना से प्रेरित थी, अर्थात अपने कई कष्टों के माध्यम से खुद को और दुनिया को खोजना। घुमक्कड़ के लिए इथाका एक भ्रामक और मायावी सपना है जो यात्री को भरमाता तो है पर फिर अथक यात्री वहां पहुंचने पर स्थैतिकता से खीजने और पुनः चलायमान होने को आतुर होने लगता है। यात्री सांकृत्यायन ने न केवल अपने लिए बल्कि इसलिए भी यात्राओं का आनंद लिया क्योंकि उन्होंने दूसरों को धर्मनिरपेक्ष तीर्थयात्रा की इस परंपरा में शामिल किया और घर पर रहनेवाले लोगों को इस विविधतापूर्ण दुनिया की आकर्षक झलकियाँ प्रदान कीं। वास्तव में, उनकी यात्राओं ने "स्वयं और दुनिया के बीच संवाद को मूर्त रूप दिया" (ब्लैंटन, यात्रा लेखन, पृष्ठ xi)। उन्होंने अपनी यात्राओं को साहित्य और पत्रकारिता के साथ जुड़े रूपकों जैसे

डायरी लेखन, संस्मरण, आत्मकथा और खोजकर्ताओं के नोट्स में लिखा, लेकिन परिशुद्धता और वस्तुनिष्ठता से समझौता नहीं किया। वह अनेक बार उन जगहों पर रुकते हैं जिन्हें मैरी लुईस प्रैट ट्रांसकल्चरेशन के "संपर्क क्षेत्र" कहते कहती हैं- जहां यात्री भाषाई और सांस्कृतिक अनुवाद की बहुसंयोजक प्रक्रियाओं के माध्यम से 'अन्य' और 'स्वयं' की परिकल्पना का निर्माण करते हैं। उत्तर-औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य में, सांकृत्यायन की यात्राएँ साम्राज्य, पश्चिमी आधुनिकता और उभरते राष्ट्रवाद की बात करती हैं। एक समृद्ध और विशाल यात्रा साहित्य के रचयिता होने के बावजूद, सांकृत्यायन को अंग्रेजी भाषा के किसी भी मौलिक यात्रा लेखन अध्ययन में जगह नहीं मिली, जैसे सचिदानंद मोहंती द्वारा संपादित *ट्रैवल राइटिंग एंड द एम्पायर* (2003), टिम यंग्स द्वारा *द कैम्ब्रिज इंट्रोडक्शन टू ट्रैवल राइटिंग* (2013), कार्ल थॉम्पसन द्वारा संपादित *द रूटलेज कम्पेनियन टू ट्रैवल राइटिंग* (2016), जूलिया कुएन और पॉल स्मेथर्स्ट द्वारा *संपादित न्यू डिरेक्शंस इन ट्रैवल राइटिंग स्टडीज* (2015), नंदिनी दास और टिम यंग्स द्वारा संपादित *द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ ट्रैवल राइटिंग* (2019) (भारतीय यात्रा लेखन अध्याय में सुप्रिया चौधरी द्वारा एक नगण्य संदर्भ को छोड़कर, पृष्ठ 173)। यहां तक कि अमृता धर द्वारा इस कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ ट्रैवल राइटिंग में यात्रा और पर्वत अध्याय में जिसमें एक खंड स्पष्ट रूप से यात्रा और हिमालय से संबंधित है, में भी सांकृत्यायन का ज़िक्र नहीं होता। क्या इसका कारण यात्रा लेखन का यूरोप केंद्रित पूर्वाग्रह है, या फिर यह है कि उनका हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद नहीं हुआ है? इस शोध पत्र का उद्देश्य यह प्रश्न करना है कि क्या राहुल सांकृत्यायन को भारतीय यात्रा साहित्य का जनक नाम मात्र की उपाधि देना पर्याप्त है या फिर व्यापक अनुवाद द्वारा उनके साहित्य का वैश्विक प्रसार कर उन्हें जल्द से जल्द यात्रा लेखन अध्ययन की कसौटी में दृढ़तापूर्वक ससम्मान स्थापित करना चाहिए?

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में ब्राह्मण परिवार में जन्मे केदारनाथ पांडे ने बाबा राम उदार दास का 10 वर्ष की उम्र में नाम ग्रहण किया. इस कम आयु में वह हिंदू साधू हो गए. जन्मजात घुमंतू वह संदेश वादी, वह जल्द ही रूढ़िवादीता के कट्टर आलोचक के रूप में उभरे. 20 वर्ष की आयु का होते होते इस वैष्णव लगभग संपूर्ण हिमालय और भारत उपमहाद्वीप की पदयात्रा कर ली थी. 1910 में शुरुआत करके वह 1913-14 दक्षिण भारत, 1916 में अयोध्या और आगरा, 1922 में लाहौर व 1919-20 में नेपाल तक पहुंच चुके थे. यह परिभ्रमण उनको मानसरोवर झील व कैलाश पर्वत पर भी ले गया था. इन सब यात्राओं के दौरान वे समुदायों व संस्कृतियों को बहुत करीब से देखते थे वह इसके लिए सख्त अनुशासन से व नित नियम से डायरी लिखा करते थे. 1926 में उन्होंने चित्रकूट की यात्रा की, 1927-28 में तिब्बत की और1929-30 में श्रीलंका की. इस दौरान हिंदू सुधारवादी आंदोलन आर्य समाज से बढ़ते मोहभंग के कारण वह बौद्ध धर्म की

ओर आकर्षित हुए. अब वह बौद्ध धर्म उस जैसी अन्य विधर्मिक ग्रंथ का अध्ययन कर कर आर्य समाज की तार्किक समीक्षा करने लगे. नेपाल (1923) और श्री लंका (1927) मैं उन्हें बौद्ध धर्म को गहराई से समझने का अवसर मिला. उनके इसी विस्तृत यात्रा, विद्वत शोध और बौद्ध दीक्षा के कारण उन्हें 1930 में महा पंडित त्रिपिताकाचार्य राहुल सांकृत्यायन की उपाधि प्राप्त हुई. यह उपाधि उनकी पाली व संस्कृत भाषाओं पर गहरी पकड़ वह बुद्ध से आत्मीय औरआध्यात्मिक जुड़ाव की देन थी जिसके कारण उन्होंने बुद्ध के पुत्र राहुल को अपना उपनाम बनाया. यद्यपि उनका जन्म मैदानी इलाके में हुआ था, परंतु उन्हें हिमालय बहुत आकर्षित करता था. उन्होंने हिमालय की अनेक बार यात्रा की वह हिमालय का शायद ही ऐसा कोई कोना हो जहां से सांकृत्यायन न गुजरे न गुजरे हो. हिमालय क्षेत्र के अनेक पहलुओं की कभी पैदल, कभी घोड़े पर व कभी बस से यात्रा करते हुए उन्होंने जानकारी एकत्रित की जैसे वहां का भूगोल, इतिहास, पर्यावरण व लोक संस्कृति. 1929 व 1938 के बीच, वह चार बार कभी किसी लामा तो कभी छेवांग नामक भिक्षु के रूप में वह तिब्बत गए. तिब्बत यात्रा पर रोक, वहां की पुलिस वो रास्ते के लुटेरों से बचने के लिए उन्होंने ऐसा किया. उनकी इन जोखिम भरी यात्राओं का सबसे महत्वपूर्ण योगदान वह बौद्ध साहित्य है जो वह तिब्बत से लाए व जिसका उन्होंने अनुवाद किया. बौद्ध प्रचारक के रूप में वह यूरोप गए (1934). 40 वर्ष की आयु तक वे न केवल पूर्ण नास्तिक हो चुके थे, अपितु मार्क्सवादी द्वंद आत्मक भौतिकवाद के प्रभाव में भी थे. प्रोफेसर फ्योदोर शचेरबात्स्की मैं उन्हें लेनिनग्राद यूनिवर्सिटी में बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया और यहां से सांकृत्यायन का समाजवादी चरण प्रारंभ हुआ. वे 1937, 1944 एवं 1962 मैं पुनः रुस गए. इसी दौरान उन्होंने बढ़ चढ़कर भारत के स्वाधीनता संग्राम में भी हिस्सा लिया. वह बिहार किसान सभा (बाद में ऑल इंडिया किसान सभा) के संस्थापक सदस्य थे व इंडियन नेशनल कांग्रेस के कार्यकर्ता भी थे. जितनी बार भी वे जेल गए, उन्होंने उसे समय का लेखन कार्य के लिए भरपूर प्रयोग किया. 1939 के बाद मृत्यु तक (सिवाय 1948 से 1955 तक जब हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में समर्थन देने के कारण उनकी पार्टी नेतृत्व से असहमति रही) वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सदस्य रहे. दूसरी बार विवाह करने के बाद, वे दार्जिलिंग में जा बसे परंतु जीविका उपार्जन वह घुमंतू प्रवृत्ति के कारण वह ताउम्र गतिमान रहे. उन्होंने हिमाचल, किन्नौर मध्य भारत (1948), नेपाल (1952. 56, 58), चीन (1958) और श्रीलंका (1959) की यात्रा की. जीवन के अंतिम कुछ वर्ष उन्होंने बौद्ध शिक्षण को समर्पित किया, परंतु दुर्भाग्यवश उन्होंने इस काल में मनोभ्रंश का सामना किया जिसके इलाज के लिए वह आखरी बार रुस गए.

उन्होंने जो यात्राएँ कीं, उनका विस्तार उनकी कृतियों की अद्वितीय मात्रा, विविधता, गुणवत्ता और गहराई से ही मेल खाता है। उनका पहला प्रकाशन 1927 में हुआ। उन्होंने लगभग 150 पुस्तकें (जिनमें से 130 प्रकाशित हो चुकी हैं) और असंख्य पत्रिका और जर्नल लेख लिखे। उनके कार्यों में धर्म, दर्शन, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, यात्रा लेखन, लोक साहित्य, इतिहास, जीवनी, राजनीति, व्याकरण, संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या, शब्दकोश और तिब्बती भाषा में शोध, संपादन और अनुवाद कार्य शामिल हैं। कुल मिलाकर, यह लगभग 50,000 पृष्ठों का है। इनमें से 15 यात्रा पुस्तकें हैं। 1931 में प्रकाशित उनकी *मेरी लद्दाख यात्रा* में मेरठ, पंजाब, मुल्तान, डेरा गाजी खान, पुंछ, कश्मीर, जोजिला दर्रा, लद्दाख, लाहौर और कुल्लू की उनकी यात्राओं का वर्णन है। *लंका* संस्मरण हमें अनुराधापुर, पोमपुर और कोलंबो ले जाता है। 1935 में प्रकाशित *मेरी यूरोप यात्रा* में कोलंबो से लंदन, पेरिस और जर्मनी तक की उनकी यात्राओं का वर्णन है। 1937 में प्रकाशित मेरी तिब्बत यात्रा में ल्हासा, चांग, शिगात्से, ग्यांगज़े और नेपाल में उनके अनुभवों का वर्णन है। उनकी *यात्रा के पन्ने* (1932 में प्रकाशित) तिब्बत की उनकी तीसरी यात्रा और फिर राजस्थान पर आधारित है। उनका यात्रा वृत्तांत *जापान* सिंगापुर, हांगकांग, शंघाई, कोबे, टोक्यो और कोयासन से होकर गुजरता है। ईरान वृत्तांत के पहले भाग में प्राचीन फारस का इतिहास और दूसरे भाग में समकालीन ईरान में बाकू, तेहरान, इस्फ़हान और शिराज होते हुए उनकी यात्रा का विवरण है। 1942 में प्रकाशित *रूस में पच्चीस महीने* 1937 में प्रकाशित पुस्तक *मेरी जीवन यात्रा* से पुनर्मुद्रित किया गया था। *किन्नर देश में* 1948 में प्रकाशित हुआ (दूसरा अंक 1953 में) यात्रा वृत्तांत हिमाचल प्रदेश और किन्नौर की एक झलक है। *तिब्बत में सवा वर्ष* पहली बार 1933 में प्रकाशित हुआ था (राहुल यात्रावली भाग 1 में पुनर्मुद्रित)। 1949 में प्रकाशित *घुमक्कड़ शास्त्र* घुमक्कड़ों के लिए उनकी बेहद मनोरंजक नियमावली पुस्तिका है। *एशिया के दुर्गम भू-खंडों में* उनकी दूसरी तिब्बत यात्रा पर आधारित थी। *चीन में क्या देखा* (1958 में प्रकाशित) नए चीन का वर्णन है। हिमाचल: एक सांस्कृतिक यात्रा 2009 में प्रकाशित हुई, जो हिमालय पर्वतों में दार्जिलिंग, कुमायूं, गढ़वाल, जौनसार, नेपाल, हिमाचल और किन्नौर क्षेत्रों में उनके विभिन्न अभियानों का संकलन है। केवल एक प्रमुख यात्रा वृत्तांत (वोल्गा से गंगा, जो वास्तव में ऐतिहासिक कथा अधिक कहलाएगी) का अंग्रेजी में पूर्ण अनुवाद किया गया है। सांकृत्यायन के समृद्ध यात्रा वृत्तांत का शेष भाग - जिसमें 15 से अधिक यात्रा पुस्तकें शामिल हैं - अधिकांशतः अनूदित है, जो उनकी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता और वैश्विक यात्रा साहित्य के सिद्धांतों में एकीकरण को गंभीर रूप से सीमित करता है।

सांकृत्यायन ने यात्रा पर अपने विचार कई लेखों में साझा किए हैं, लेकिन उनका *घुमक्कड़ शास्त्र* (1949) निश्चित रूप से उनके जीवन के सभी अनुभवों का सार है। सांकृत्यायन यात्रा को विकास और प्रगति के समान मानते हैं। वह प्रकाशित करते हैं कि अगर गतिशीलता न होती तो पृथ्वी पर मानव जीवन

न तो जन्म लेता और न ही बच पाता। अगर लोग जहाँ पैदा हुए थे वहीं रहते तो न तो कोई आविष्कार होता और न ही कोई खोज। चार्ल्स डार्विन जैसे वैज्ञानिकों, कोलंबस और वास्को दा गामा जैसे खोजकर्ताओं, ईसा मसीह, बुद्ध और महावीर जैसे पैगम्बरों, रामानंद, चैतन्य और दयानंद जैसे सुधारकों का हवाला देते हुए, सांकृत्यायन सभी धर्मों में सबसे महान धर्म- 'घुमक्कड़ धर्म'- की वकालत करते हैं । 'घुमक्कड़ धर्म' यानी घुमक्कड़ का धर्मनिरपेक्ष धर्म- परन्तु, वे यह स्पष्ट करते हैं कि घुमक्कड़ी (भटकना), चाहे उद्देश्यपूर्ण हो या उद्देश्यहीन, कीमती समय व ऊर्जा को बरबाद करने या कर्तव्य से बचने का नाम नहीं है। इसके लिए दृढ़ संकल्प, तैयारी और समझदारी की जरूरत होती है। यह ज्ञान और विकास के लिए आजीवन समर्पण का नाम है। एक प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ को जो पहला संकल्प लेना चाहिए, वह है सांसारिक मोह-माया और वैवाहिक सुख के साथ-साथ अपने स्वयं के भय और आराम के मोह जाल को काटना। 16-18 वर्ष की आयु में इस मार्ग को पकड़ लेना भी महत्वपूर्ण है। 24 वर्ष की आयु से अधिक विलम्ब नहीं करना चाहिए क्योंकि उस समय तक आदतों की ताकतें घुमक्कड़ की ऊर्जा को कम करना शुरू कर देती हैं। हालाँकि उन्होंने खुद 10 वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया था, लेकिन वे आकांक्षी युवा घुमक्कड़ों को इस तरह की जल्दबाजी से बचने और भाषाओं और समाजशास्त्र, भूगोल, धर्मशास्त्र और यात्रा लेखन जैसे अन्य विषयों में खुद को अच्छी तरह से शिक्षित करने की सलाह देते हैं। वे यह भी कहते हैं कि यात्रा शुरू करने से पहले गंतव्य का अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए। इस बौद्धिक तंत्र से भी अधिक महत्वपूर्ण है शारीरिक और मानसिक स्वास्थय जो भावी यात्रियों को विकसित करनी चाहिए। घुमक्कड़ के लिए अपरिहार्य गुणों में से एक विनम्रता है जो उसे दुनिया के किसी भी हिस्से में लोगों के साथ समान व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। एक सच्चा घुमक्कड़ सुसंस्कृत और शिक्षित होता है और उसमें आत्म-सम्मान की भावना होती है। एक घुमक्कड़ के पास बहुमुखी व्यावसायिक कौशल (जरूरी नहीं कि सफेदपोश कौशल हो) जो उसे विविध संस्कृतियों में आजीविका कमाने में मदद करे। ऐसा इसलिए है क्योंकि खुद के कमाए संसाधनों पर निर्वाह करना और परिवार के संसाधनों को खत्म न करना एक घुमक्कड़ की असली पहचान है। वह नृत्य रूपों, वाद्ययंत्रों और संगीत को जानने, सीखने और अभ्यास करने के महत्व पर जोर देते हैं क्योंकि ये तीनों न केवल विदेशी संस्कृतियों में अकेलेपन से लड़ने में मदद करते हैं बल्कि वहाँ के लोगों के साथ घनिष्ठता स्थापित करने में भी कारगर रहते हैं। सांकृत्यायन भारत में आदिवासी या पिछड़ी संस्कृतियों के बारे में अपना ज्ञान साझा करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि एक कट्टर घुमक्कड़ निश्चित रूप से खुद को उनके बीच पाएगा। वह घुमक्कड़ को वहाँ की बहुत अलग जीवन शैली के प्रति आगाह करते हैं, लेकिन वह यह भी कहते हैं कि ऐसे दूर-दराज के निषिद्ध क्षेत्रों में घुसने का रोमांच घुमक्कड़ को स्वदेशी लोगों के बारे में जागरूकता फैलाने, उनकी जरूरतों के प्रति सरकारों का ध्यान आकर्षित करने और उनके साथ आर्थिक और सांस्कृतिक लेन-देन की संतुष्टि देगा।

इसके बाद, वे खानाबदोश संस्कृतियों की बात करते हैं। सिरकीवालों (वे जो एक एशियाई घास 'मुंज' के फूलों के डंठलों के ऊपरी हिस्से से बने चटाई या छप्पर से बने अस्थायी तंबू में रहते हैं), राजपूताना और बुंदेलखंड में गड़िया लोहार (बैलगाड़ी पर यात्रा करने वाले लोहार), तिब्बत के रोमा और खाम्पा का जिक्र करते हुए, वे घुमक्कड़ और खानाबदोशों के बीच स्वाभाविक आत्मीयता को रेखांकित करते हैं (हालांकि खानाबदोश, प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ के विपरीत, परिवार और आजीविका की जिम्मेदारी के बोझ तले दबे होते हैं)। सांकृत्यायन कहते हैं कि घुमक्कड़ उनके साथ एक या दो महीने बिताकर बहुत कुछ हासिल कर सकता है। साथ ही, जो घुमक्कड़ मानव विद्वत्ता में इस महत्वपूर्ण कमी को भरना चाहता है, उसके लिए उनके कुलों, भाषाओं और साहित्य पर शोध एक अछूता क्षेत्र है। स्त्री के घुमक्कड़ होने का जटिल प्रश्न सांकृत्यायन *घुमक्कड़ शास्त्र* में संबोधित करते हैं जो आज यात्रा लेखन के अध्ययन में पूछा जा रहा है। वे लिखते हैं, "घूमने वाले का धर्म वैश्विक और सर्वव्यापी है। इस धर्म का पालन करने से किसी को भी मना नहीं किया जा सकता। इसलिए, अगर देश की युवतियां घुमक्कड़ बनना चुनती हैं, तो यह बहुत खुशी की बात है। यह कहना निराधार है कि वे सिर्फ इसलिए साहस या जिज्ञासा से रहित हैं क्योंकि वे महिला हैं... जहां तक घुमक्कड़ी का सवाल है, महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त हैं।" वे महिलाओं की यात्रा में आने वाली बाधाओं के लिए पितृसत्ता और प्रकृति को जिम्मेदार ठहराते हैं, लेकिन वे यह भी कहते हैं कि बौद्ध धर्म और यूरोपीय समाज जैसे धर्म महिलाओं की यात्राओं के प्रति कहीं अधिक सहिष्णु रहे हैं। उनके अंदर का सुधारक भारतीय समाज में भी इसी तरह के सामाजिक बदलाव की हिमायत करता है और चाहता है कि "स्वेच्छाधारी और परिणामोन्मुखी महिला कभी भी रूढ़िवादी पुरुषवादी मानसिकता पर ध्यान नहीं देगी" । ब्राह्मणवादी विचारधारा को चेतावनी देते हुए वे कहते हैं कि "इसने लंबे समय तक पुरुष यात्रियों के मार्ग में बाधाएं पेश की हैं, लेकिन अब वे इसके नियंत्रण से बाहर हैं। महिलाएं भी इसका अनुसरण करने वाली हैं। "समुद्र पार करने वाले यात्रियों को बहिष्कृत करने वाली भारतीय प्रथा का जिक्र करते हुए सांकृत्यायन कहते हैं कि घुमक्कड़ों का पंथ कभी भी संकीर्ण रूप से सांप्रदायिक नहीं हो सकता। हिंदू, बौद्ध, ईसाई पैगंबर- सभी ने दूर-दूर तक यात्रा की।अतः, एक घुमक्कड़ या तो एक सहिष्णु धर्मनिरपेक्षवादी होता है या शायद नास्तिक भी। जबकि धर्म घुमक्कड़ के उपक्रमों के लिए कोई बाधा नहीं करता है, परन्तु एक चीज जो करती है, वह है प्रेम। वह प्रेम नहीं जो एक घुमक्कड़ को स्वाभाविक और मानवीय रूप से सह-प्राणियों के लिए होना चाहिए, बल्कि वह प्रेम जो आसक्ति और आलस्य को जन्म देता है। संतुलित, तर्कसंगत और ईमानदार दृष्टिकोण सांकृत्यायन को इस बात पर जोर देने के लिए मज़बूर करता है कि एक घुमक्कड़ वास्तव में प्रेम, सेक्स और परिवार के सामान्य सुखों का आनंद लेने के लिए नहीं बना है, लेकिन साथ ही वह इन संस्थाओं को हल्के और गैर-जिम्मेदाराना तरीके से भी नहीं ले सकता है। अनौपचारिक विवाह और सेक्स आराम से ज्यादा परेशानी पैदा कर सकते हैं।

केवल एक तरीका है जिससे विवाह एक घुमक्कड़ के लिए बाधा नहीं होगा- यदि वह किसी अन्य स्वतंत्र-पक्षी घुमक्कड़ स्त्री से शादी करने में कामयाब हो, लेकिन यह दुर्लभ है, और अंततः घुमक्कड़ को कामुक प्रेम और यात्रा प्रेम के बीच चयन करना होगा।

भारतीय साहित्य में यात्रा लेखन का इतिहास आम तौर पर हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग (1868-1900) से जोड़ा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र को अपने समय की पत्रिकाओं में प्रकाशित पांच यात्रा वृत्तांत लिखने का श्रेय दिया जाता है- जो हैं, *सरयू पार की यात्रा, मेहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, हरिद्वार की यात्रा* और *बैद्यनाथ की यात्रा।* बालकृष्ण भट्ट ने *हिंदी प्रदीप* पत्रिका में अपनी *कतिकी का स्नान* और *गया यात्रा* प्रकाशित की। हरदेवी द्वारा लिखी गई *लंदन यात्रा* ओरिएंटल प्रेस, लाहौर, द्वारा 1883 में प्रकाशित पहली हिंदी यात्रा पुस्तक है। इसके बाद, भगवानदास वर्मा द्वारा *लन्दन की यात्रा* (1884), दामोदर शास्त्री द्वारा मेरी *पूर्वदिगयात्रा* (1885), तोताराम वर्मा द्वारा *केदारनाथ यात्रा* (1890) ने इस परंपरा को जारी रखा। इस काल की सबसे महत्वपूर्ण यात्रा पुस्तक देवीप्रसाद खत्री की *रामेश्वर यात्रा* है। इस काल की एक पत्रिका जिसने विशेष रूप से यात्रा लेखन को प्रोत्साहित किया वह थी महावीर प्रसाद द्वारा संपादित *सरस्वती पत्रिका।* श्रीधर पाठक, लक्ष्मीशंकर मिश्र, हरिस्वरूप शर्मा शास्त्री, ठाकुर गदाधर सिंह, रमाशंकर व्यास और सत्यदेव प्रिव्राजक के साथ महावीर प्रसाद स्वयं इस काल के प्रसिद्ध यात्रा लेखक थे। इसके बाद बीसवीं सदी में अज्ञेय, निर्मल वर्मा, यशपाल, शानी, मंगलदेश डबराल ने यात्रा लेखन की शैली को और निखारा। यद्यपि सांकृत्यायन को अक्सर हिंदी यात्रा लेखन का जनक माना जाता है, परन्तु तथ्य यह है की वह इस विकासशील परंपरा की एक प्रमुख कड़ी हैं. निःसंदेह वे विशेष उल्लेख के हकदार हैं. ऐसा मुख्यतः इसलिए क्योंकि इस बहुभाषी (उर्दू, हिंदी, संस्कृत, अरबी, फारसी, भोजपुरी, पाली, सिंघली, तिब्बती, मंगोलियन, रूसी सहित करीब 34 भाषाओं में पारंगत और करीब 26 भाषाओं में लिख सकते थे) और बहुश्रुत लेखक ने न केवल बहुत प्रचुर यात्रा लेखन किया है बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने यात्रा (यायावरी/घुमक्कड़ी) को एक ऐसे दर्शन के रूप में स्थापित किया जो मानव जिज्ञासा, विकास और स्वतंत्रता का द्योतक है, जो आत्म खोज के साथ-साथ लोगों, स्थानों और संस्कृतियों की खोज में सक्षम है।

सांकृत्यायन का अनुवाद करना एक अत्यंत लाभकारी परियोजना है क्योंकि सांकृत्यायन का भारतीय, साम्राज्यवादी, पर्वतारोही, तीर्थयात्री, साधक, राष्ट्रवादी, बीसवीं सदी के तीसरी दुनिया के यात्री-लेखक का व्यक्तित्व यात्रा लेखन की कई महत्वपूर्ण बारीकियों को अध्ययन के लिए प्रस्तुत करता है। 1943 के बंगाल वगरेंसी एक्ट ने सभी प्रकार की यथाकथित आवारागर्दी को प्रतिबंधित घोषित कर दिया। हालाँकि, सांकृत्यायन न केवल पूरे ज़ोर शोर के साथ ऐसा करते हैं, बल्कि इसे साम्राज्य से खिलाफत का तरीका भी बनाते हैं। अविशेक रे (2014) लिखते हैं:

> राष्ट्रवाद के चरम पर, जबकि भारतीय बुद्धिजीवियों का एक बड़ा हिस्सा ज्ञानोदय को रामबाण मानता था और पश्चिमी विचारों को 'प्रगतिशील' मानता था, वहीं दूसरे का लक्ष्य सांस्कृतिक स्वदेशीता को फिर से जगाना था। यह दूसरा तबका नस्लीय उपनिवेशित विषय को 'साम्राज्य को वापस लिखने' का माध्यम देना चाहता था ताकि उपनिवेशवादियों द्वारा समाप्त किए गए सांस्कृतिक अंतर को उजागर कर के वह आदमी (' आदमी' क्योंकि औपनिवेशिक विषय हमेशा मर्दाना होता है) राष्ट्रवाद की भावना को फिर से स्थापित करने में सक्षम बने (पृष्ठ 163) ।

इस प्रकाश में, सांकृत्यायन द्वारा अपनी यात्राओं का दस्तावेजीकरण उन्हें एक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी बनाता है, जैसा उन्हें प्रायः माना जाता है। अलका आत्रेय चूडाल द्वारा लिखी गई सांकृत्यायन की जीवनी जिसका शीर्षक है *अ फ्रीथिंकिंग कल्चरल नेशनलिस्ट : अ लाइफ हिस्ट्री ऑफ़ राहुल सांकृत्यायन* (एक स्वतंत्र विचारक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी: राहुल सांकृत्यायन का जीवन इतिहास), यहां तक कहती है कि है कि सांकृत्यायन पहले राष्ट्रवादी थे और बाद में घुमक्कड़।उसके अनुसार सांकृत्यायन यात्रा के लिए विशुद्ध प्रेम से प्रेरित नहीं थे, बल्कि राष्ट्र के निर्माण से प्रेरित थे ताकि उसका गौरव बहाल हो सके। यही उनकी यात्रा कार्यक्रम और एजेंडा थे। प्रभात कुमार जैसे समीक्षकों ने सांकृत्यायन की "भारतीयता" या "राष्ट्रीयता" के विकृत और एकरंगी रूप से व्याख्या पर आपत्ति जताई है जिसने वस्तुतः "कई जोखिम भरे रास्ते तय किए, कई जिंदगियां जी, अलग-अलग मुद्दों और विषयों पर भावुकता से लिखा, विभिन्न हठधर्मिता में फंसा और फिर उन पर सवाल उठाया, अपने समय की कई सीमाओं का सम्मान किया, उनका अतिक्रमण किया और उनका उल्लंघन किया (कुमार, 2018, पृष्ठ 1)। ऐसे कई अन्य दृष्टिकोण हैं जो उनकी यात्राओं के किसी एकीकृत सूत्र को पहचानने का प्रयास करते हैं, उदाहरण के लिए, भारती पुरी (2011) उन्हें सिल्क रोड का यात्री कहती हैं। वह लिखती हैं:

> सिल्क रोड और सिल्क रूट्स पर एशिया के पहाड़ी इलाकों में सांकृत्यायन की ऐतिहासिक यात्राएँ और छोटे-छोटे भूले-बिसरे आवासों का उनका वर्णन न केवल 20वीं सदी के हिंदी जगत को बल्कि समग्र रूप से यात्रा लेखन को भी पूरी तरह से नए आयाम प्रदान करता है। यात्रा साहित्य और लेखन एक अध्ययन के क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ है, जो पारंपरिक सीमाओं को पार कर गया; इसमें, केडीएम (किन्नौर देश में) जैसे राहुल सांकृत्यायन के लेखन स्थानीयता के महत्व और कई अनसुनी आवाज़ें जो खो सकती थीं के साक्ष्य के रूप में खड़े हैं (पृष्ठ 55, 56)

वह उनके यात्रा लेखन को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए नहीं बल्कि 'स्वदेशी' और 'स्थानीयता' के संरक्षण के लिए समर्पित बताती हैं, जो कि आज 'वैश्विकता' का विपरीतार्थक शब्द बन गया है। जबकि वैश्विकता नव-उदारवादी नव-पूंजीवादी गतिशीलता से ही उत्पन्न हुई मानी जाती है, यह ध्यान रखना दिलचस्प है

कि सांकृत्यायन गतिशीलता का उपयोग स्थानीयता की खोज के लिए करते हैं। इस प्रकार, सुबीर रैना (2018) हमें यह याद दिलाते हैं कि यद्यपि गतिशीलता होमो विएटर के लिए निर्विवाद स्थिति है, लेकिन इसका अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग है, जिस में "सभ्यता, प्रगति और आधुनिकता" से लेकर "भटकन, प्रतिरोध और आपराधिकता" तक शामिल हैं (पृष्ठ 250)। गतिशीलता को सामाजिक विस्थापन, मजबूत प्रवर्तक, शक्ति का उत्पाद और उत्पादक, भू-राजनीतिक प्रभुत्व, एक मनःस्थिति, एक विचारधारा, कर्षण प्रक्रिया, सांस्कृतिक दर्शन के रूप में देखा गया है। जबकि लोग अपने-अपने तरीके से गतिशील रहे हैं, कई अनिच्छा से (शरणार्थियों की तरह) और कई मजबूरन (जैसे ट्रांस-नेशनल कंपनियों के कर्मचारी), गतिशीलता का एक प्रमुख पहलू हमेशा से ही परावर्तन, प्रतिरोध और द्रोह रहा है (रैना, 2018)। राहुल सांकृत्यायन इस मामले में एक उदाहरण हैं क्योंकि उनकी यात्रा एक तरफ मानदंडों और संस्थाओं की शाश्वत आलोचक रही है, और दूसरी तरफ न केवल व्यक्तिगत निर्वाण बल्कि मानवता के सामूहिक निर्वाण की खोजकर्ता भी। असंख्य कठिन यात्राएँ करने वाले एक अथक यात्री होने के बावजूद, यात्रा उनके दर्शन में एक रूपक के तौर पर भी पवित्र स्थान रखती है। जैसा कि माया जोशी (2009) निष्कर्ष निकालती हैं,

> स्वयं और समाज और आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की दासता से मुक्ति पाने के लिए, उन्हें चाहिए था धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, क्षेत्रीय और वैश्विक, प्राचीन और आधुनिक, विद्वान और कार्यकर्ता के बीच की खाई को सोचना और पाटना (पृष्ठ 144) ।

सांकृत्यायन का अनुवाद करते समय यह स्वाभाविक ही है कि हमें सांकृत्यायन में एक सहज सहयोगी और एक निपुण अनुवादक मिले। उनका यात्राओं के दौरान निरंतर विकसित होता हुआ स्व अनुवादित होता हुआ स्व भी है। वे संस्कृतियों का अनुवाद उन लोगों के लाभ के लिए करते हैं जो यात्रा करते हैं और जो नहीं करते हैं । और निश्चित रूप से, वे शाब्दिक अनुवाद भी करते हैं, क्योंकि वे दुनिया की विभिन्न भाषाओं के दस्तावेजों और विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोगों से मिलते हैं। उनकी हिंदी एक डायरी लेखक की तरह संवादात्मक है, जो बोलचाल के और अन्य भाषाओं के शब्दों से भरपूर है। बेशक, यात्रा वृत्तांत का पहला और सबसे बड़ा उद्देश्य पाठक के लिए जगह को जीवंत बनाना है, लेकिन अतिरिक्त उद्देश्य स्वतंत्र भारत के भविष्य यात्रियों के साथ-साथ नीति निर्माताओं को प्रासंगिक जानकारी देना भी है। उनके लेखन में एक नए स्वतंत्र राष्ट्र की कई छवियां हैं जैसे कि विकसित हो रहा बुनियादी ढांचा, प्रशासन और शासन की बदली हुई संरचनाएँ, उभरते शहर और लुप्त होते हुए राजवंश । था। उदहारण के लिए, *किन्नौर देश में*के सन्दर्भ में हिमाचल प्रदेश कुछ इस तरह नज़र आता है । हिमाचल प्रदेश, जो कई टुकड़ों में बंटा हुआ था, उस समय एक राज्य के रूप में उभर रहा था । शिमला शहर पंजाब में था,

तो वहीं कुल्लू और कांगड़ा भी पंजाब के हिस्से थे। इस उभरते हुए राज्य के कई महत्वपूर्ण पात्र सांकृत्यायन की कथा में आते हैं। उन्होंने वहां की राजमाता, यानी हिमाचल प्रदेश के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह (1934-2021) की मां से मुलाकात की । उन्होंने केंद्र द्वारा नियुक्त हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन प्रशासक श्री एनसी मेहता से मुलाकात की जिन्होंने पूरी यात्रा के दौरान सांकृत्यायन की पीडब्ल्यूडी के विश्राम गृहों और बंगलों में रहने की व्यवस्था करवाई। जैसा कि सांकृत्यायन ने उल्लेख किया है, किन्नौर अभी भी स्वतंत्र भारत में चल रही परिवर्तन की बयार से अछूता था। आजादी के एक साल बाद भी किन्नौर के लोग यह नहीं समझ पाए कि रजवाड़ा शाही खत्म हो गई है और लोकतंत्र आ गया है। किन्नौर के लोग अभी भी बुशहर के दिवंगत राजा पदम सिंह के बेटे राजकुमार वीरभद्र सिंह के कामरू और रामपुर में राज्याभिषेक का इंतजार कर रहे थे। अपनी यात्राओं के दौरान, उन्होंने भविष्यवाणी की कि स्वतंत्र भारत को राज्य में अर्थव्यवस्था और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अच्छी सड़कें उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। उन्होंने ऊपरी हिमालयी क्षेत्र के कृषि उत्पादों के महत्व को महसूस किया । उन्होंने चिनी (अब कल्पा) के तहसीलदार को एन सी मेहता को हिमालयी क्षेत्र के कृषि उत्पादों का सर्वेक्षण संकलित कर के देने की सिफारिश की ताकि राज्य उचित खाद्य वितरण और निर्यात-आयात नीतियों को लागू कर सके। आशीष नड्डा लिखते हैं, "फल संपदा मेवों से भरपूर हिमाचल कभी नहीं हो पाता अगर काशी का ये फक्कड़ घुमन्तु महापंडित किन्नर की यात्रा के दौरान इस प्रदेश का भविष्य यहीं के संसाधनों के नजरिये से न देखता। " (नड्डा, 2022)।

अपनी यात्रा वृत्तांत लिखते समय, सांकृत्यायन ने उन स्थानों की अनूठी ऐतिहासिक, भौगोलिक, प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ-साथ यात्रा की संचालन और चुनौतियोंको स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। उदाहरणार्थ, किन्नौर हिमाचल प्रदेश में तिब्बत सीमा पर सतलुज नदी के तट पर स्थित एक सुरम्य क्षेत्र है। यह 1816 में बुशहर के तत्कालीन रियासत राज्य के एक भाग के रूप में ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया था। 31-05-55 से 32-05-20 N अक्षांश से 79-0-50 E देशांतर के बीच स्थित, किन्नौर हिमाचल प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा जिला है। पूर्व में जिले से सटा तिब्बत है, उत्तर में लाहौल-स्पीति, उत्तर-पश्चिम में कुल्लू, पश्चिम और दक्षिण में शिमला जिला और दक्षिण-पूर्व में उत्तर प्रदेश का उत्तरकाशी जिला स्थित है। सतलुज, स्पीति और अन्य घाटियों वाले इस क्षेत्र में बसे किन्नौर लोग कृषक और व्यापारी थे। किन्नौर के लोग बहुपति प्रथा का पालन करते थे क्योंकि व्यापार के लिए पुरुष सदस्यों को अक्सर लंबी यात्राएं करनी पड़ती थीं (सिंह, 1987)। किन्नौर आज भी एक सीमांत क्षेत्र है, जहाँ अन्यथा घनी आबादी वाले हिमाचल में न बहुत अधिक जाया जाता है न जिसे बहुत अधिक जाना जाता है। इस क्षेत्र में सांकृत्यायन का गहन अध्ययन इस क्षेत्र के ज्ञान के स्थायी स्रोतों में से एक है। वे अपने प्रशंसकों, मित्रों, सहयोगियों और सहायकों के विशाल समुदाय का उल्लेख करते हैं जो एक विशिष्ट

भारतीय सामाजिक नेटवर्क के रूप में उनकी यात्राओं को सुविधाजनक बनाता है। वे समय-समय पर अपनी चिकित्सा समस्याओं जैसे कि मधुमेह की बढ़ती बीमारी, कम होती सहनशक्ति, बूढ़ा होता शरीर और नाज़ुक पाचन का विवरण देते हैं। लेकिन फिर भी स्थिरता कोई विकल्प नहीं है- वे सबसे कष्टदायक परिस्थितियों में भी हारने या पीछे हटने का उल्लेख नहीं करते हैं। वे समय-समय पर रुकते और आराम करते हैं, लेकिन केवल तभी जब इसकी बहुत आवश्यकता होती है। विराम के ये क्षण उन्हें अपने भीतर के भावों से जुड़ने में मदद करते हैं। 04 जून 1948 को चिनी में पेचिश से पीड़ित होने पर वे एक छोटा सा अवकाश लेते हैं। वे जीवन, अतीत, यात्रा और युवावस्था के बारे में सोचते हुए समय बिताते हैं:

> 22 साल पहले मैं दो दिन के लिए यहां रुका था, इस बार आधा महीना हो गया है। क्या मैं कुछ अलग हूं? वह एक तरह से मेरी पहली साहसिक यात्रा थी। मैं कश्मीर से होते हुए लद्दाख गया था, फिर तिब्बत के पश्चिम में घुसकर यहां पहुंचा था। यह एक अजीब देश था, और भाषा भी अनजानी थी। मेरे पास एकमात्र संसाधन मेरा अपना शरीर था। लेकिन जो चीज सबसे अलग थी, वह थी यौवन का जोश। आज भी कभी-कभी मुझे वह उल्लास महसूस होता है, लेकिन यह व्यावहारिक विचार, "अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सीमित समय ही होता है" उसे तुरंत शांत कर देता है। (सांकृत्यायन, 1948, 2009, पृ. 102)

जैसा कि उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है, उनकी यात्री की शख्सियत में अग्रणी, सिद्धांतकार, भाषाविद्, लेखक, संस्कृतिविद्, राष्ट्रवादी, नृवंशविज्ञानी, ऋषि और मानवता, विशेषकर यात्रियों के मार्गदर्शक की अनेक व्यक्तित्वों का समावेश है। उनकी भूमिकाएँ और चरित्र स्थानीय होने के साथ-साथ वैश्विक भी हैं, वे पार-राष्ट्रीय होने के साथ-साथ भारतीय भी हैं और दार्शनिक होने के साथ-साथ भौतिक भी हैं। इस प्रकार वे न केवल भौगोलिक सीमाओं को चुनौती देते हैं, बल्कि पूर्व-पश्चिम, मध्यकालीन-आधुनिक या शैली-विरोधी शैली के बंधनों को भी चुनौती देते हैं। एक असाधारण यात्री होने के नाते, सांकृत्यायन का यात्रा लेखन समृद्ध और सूक्ष्म है, जिसमें समान रूप से सार्वभौमिक और कालातीत अपील है। सांकृत्यायन को किसी भाषा या सीमा तक सीमित नहीं किया जा सकता है और इसलिए, उन्हें यात्रा लेखन के क्षेत्र में उनका उचित स्थान तभी दिया जा सकता है, जब उनके सभी कार्यों का बड़े पैमाने पर अनुवाद किया जाए। यह विलंबित लेकिन बहुत जरूरी प्रविष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण तरीकों से यात्रा साहित्य अध्ययन क्षेत्र की आलोचना और संवर्धन करेगी।

संदर्भ

ब्लैंटन, केसी. (2002). ट्रैवल राइटिंग. रूटलेज.

चौधरी, सुप्रिया. (2019). इंडियन ट्रैवल राइटिंग. कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ ट्रैवल राइटिंग में नंदिनी दास और टिम यंग्स (संपादक). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

चुड़ल, अलका अत्रेया। (2016) । अ फ्रीथिंकिंग कल्चरल नेशनलिस्ट: अ लाइफ हिस्ट्री ऑफ़ राहुल सांकृत्यायन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

दास, नंदिनी और टिम यंग्स (संपादक)। (2019) । कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ ट्रैवल राइटिंग। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

जोशी, माया. (2009). राहुल सांकृत्यायनस जरनीज़ ऑफ़ द सेल्फ: नेशन, कल्चर, आइडेंटिटी. स्टडीज इन हुमानिटीज़ एंड सोशल साइंसेज खंड XVI, संख्या 1 और 2 में, मानस रे (संपादक), पृ. 119-146. अंतर-विश्वविद्यालय मानविकी और सामाजिक विज्ञान केंद्र, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला कुएन, जूलिया और पॉल स्मेथर्स्ट (संपादक)। (2015) । न्यू डिरेक्शंस इन ट्रेवल राइटिंग स्टडीज । पालग्रेव मैकमिलन

कुमार, प्रभात। (2018) । पुस्तक समीक्षा: अ फ्रीथिंकिंग कल्चरल नेशनलिस्ट: अ लाइफ हिस्ट्री ऑफ़ राहुल सांकृत्यायन । साउथ एशियन हिस्ट्री एंड कल्चर में। रूटलेज।

मैकके, ए. (2015) । किन्नौर एंड द आदि कैलास। कैलास हिस्टोरीज में। ब्रिल.

मोहंती, सचिदानंद. (2003) । ट्रेवल राइटिंग एंड द एम्पायर। कथा।

नडडा, आशीष। (15 अप्रैल 2022) । 1948 में ही हिमाचल का भविष्य बता चुके थे राहुल सांकृत्यायन. *हिमाचल में* में. https://inhimachal.in/special/educative/rahul-sankrityayan-ji-and-himachal-pradesh/

प्रैट, मैरी लुईस. (1992). इंपीरियल आइज़: ट्रैवल राइटिंग एंड ट्रांसकल्चरेशन. रूटलेज.

पुरी, भारती. (2011). ट्रैवलर ऑन द सिल्क रोड: राइट्स एंड रुट्स ऑफ़ पैसेज इन राहुल सांकृत्यायनस हिमालयन वंडरलस्ट। चाइना रिपोर्ट 47: 1, पृष्ठ 37-58 में। सेज प्रकाशन।

रैना, सुबीर. (2018). द मिक्रोपॉलिटिक्स एंड मेटाफिजिक्स ऑफ़ मोबिलिटी एंड नोमादिस्म: कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ शास्त्र एंड गिल्स डेल्यूज़ / फ़ेलिक्स गुआटारी

"नोमाडोलोजी" । सोशल थ्योरी और एशियन डायलॉग्स में ए. के. गिरी (संपादक), पृ. 247-270. पैल्ग्रेव मैकमिलन.

रे, अविषेक. (2014) । द रेसुररेक्शन ऑफ़ द वगबोन्ड: आइडेंटिटी पॉलिटिक्स इन सांकृत्यायनस "घुमक्कड़ शास्त्र "। *इंडियन लिटरेचर* खंड 58, संख्या 2 (280), पृष्ठ 163-175। साहित्य अकादमी।

सांकृत्यायन, राहुल. (1948) किन्नर देश में. भारत प्रकाशक.

सांकृत्यायन, राहुल. (1949) घुमक्कड़ शास्त्र. राजकमल प्रकाशन.

सांकृत्यायन, राहुल. (2009) । हिमाचल-एक संस्कृति यात्रा। वाणी प्रकाशन.

सिंह, जोगीश्वर. (1987). अ ब्रीफ सर्वे ऑफ़ विलेज गोड्स एंड देयर मनी लेंडिंग ऑपरेशन्स इन किन्नौर डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ हिमाचल प्रदेश; अलोंग विथ एअरलिएर इम्पोर्टेंस ऑफ़ ट्रेड विथ तिब्बत. प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द थर्ड कोलोक्वियम ऑन लदाख हेल्ड इन 1987 ऐट हिरर्णहुत नियर ड्रेसडेन (जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक). https://ladakhstudies.org/wissenschaftsgeschichte-und-gegenwartige-forschungen-in-nordwest-indien/

थॉम्पसन, कार्ल. (2011). ट्रेवल राइटिंग: द नई क्रिटिकल इडियम. रूटलेज

टिम यंग्स. (2013). कैम्ब्रिज इंट्रोडक्शन टू ट्रैवल राइटिंग. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.